<u>पाठ-**39**</u>

मसीह

यूहन्ना **20:19-31**

> दुनिया अनेक दावों से भरी पड़ी है**,** और कभी**-**कभी सत्य को गलत से पहचानना कठिन होता है। तो हम यीशु के दावों का मूल्यांकन कैसे करें**?** चारों सुसमाचार आपको सबूत देते हैं कि आपको यह विश्वास करने की आवश्यकता है कि यीशु मसीह हैं**,** परमेश्वर के पुत्र हैं। वे आपको आकर देखने के लिए आमंत्रित करते हैं। और जैसे ही आप यीशु के जीवन**,** मृत्यु और पुनरुत्थान पर ईमानदारी से नज़र डालेंगे**,** आप विश्वास के साथ उनके प्रति प्रतिक्रिया करने में सक्षम होंगे।

मान लीजिए आप किसी अपरिचित शहर में हैं और आपका सेल फोन खो गया है। आपको एक ऐसी जगह पर जाना है जहाँ आप पहले कभी नहीं गए हों, और आप नहीं जानते कि वहाँ कैसे पहुँचा जाए। ऐसे दो तरीके हैं जिनसे आप आगे बढ़ सकते हैं।

सबसे पहले, आप दिशा निर्देश मांग सकते हैं। कोई आपको बता सकता है कि आपको 29 नंबर की बस पकड़नी है, पुराने सीमेंट कारखाने के बाद दूसरे स्टॉप पर उतरना है, बाईं ओर तीसरी सड़क लेनी है, पुल के ऊपर से जाना है, मैदान के पार, पुल्ल के नीचे से होकर जाना है, और फिर आपके दाईं तरफ आपकी मंज़िल होगी।

दूसरा तरीका टैक्सी लेना होगा। आप ड्राइवर से आपको अपने गंतव्य तक ले जाने के लिए कहेंगे, और आप वहाँ पहुँच जाएंगे।

अब मान लीजिए, पहले उदाहरण में, जैसे ही आप बस में चढ़े, जिस आदमी ने आपको निर्देश दिया था उसे दिल का दौरा पड़ जाए और उसकी मृत्यु हो जाए। यह दुखद घटना आपकी यात्रा में बाधा नहीं बनेगी क्योंकि आपके पास पहले से ही निर्देश हैं।

परन्तु मान लीजिए कि आप टैक्सी में हैं, और जैसे ही आप पुराने सीमेंट कारखाने के पास से गुजर रहे हैं, ड्राइवर को दिल का दौरा पड़ जाता हैं और उसकी मृत्यु हो जाती है। अब आप पूरी तरह से फंस गए हैं। आप अपनी मंजिल का रास्ता नहीं जानते और जिस पर आपने भरोसा किया था वह आपको वहाँ तक ले जाने में असमर्थ है।

ईसाई धर्म का मूल निर्देशों के समूह में नहीं, बल्कि हमें स्वर्ग में ले जाने की यीशु की क्षमता में निहित है। नए नियम की शिक्षा आपको नहीं बचाएगी बल्कि, वह यीशु मसीह हैं जो आपको बचाएंगे। ईसाई धर्म जो वादा करता है उसे पूरा करने की यीशु की क्षमता के साथ खड़ी होती है या गिरती है।

यीशु हमें बताते हैं कि वे हमें पिता के पास ला सकते हैं, और जब, टैक्सी ड्राइवर की तरह, वे हमें "अंदर आने" के लिए आमंत्रित करते हैं, तो हमें एक निर्णय का सामना करना पड़ता है: क्या मैं अपने भाग्य को उन पर लगाने के लिए तैयार हूं?

आप न्यायिक परिषद हैं

यूहन्ना के सुसमाचार में लिखा गया था "कि तुम विश्वास करो कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है, और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ" (यूहन्ना 20:31)।

कल्पना कीजिए कि आप किसी अदालत की न्यायिक परिषद में हैं। प्रेरित यूहन्ना आपको कुछ सबूत प्रस्तुत करना चाहते हैं, और जब वह समाप्त हो जाएगा, तो वे निर्णय के लिए आपकी प्रतीक्षा करेंगे।

यूहन्ना आपको डराने की कोशिश नहीं कर रहे हैं, न ही वे आपकी भावनाओं से खेल रहे हैं। वे आपको वह सबूत प्रस्तुत कर रहे हैं जिसे उन्होंने यीशु के जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान के प्रत्यक्ष गवाह के रूप में देखा और सुना है। वह बस इतना चाहते हैं कि आप सबूत सुनें। "आओ और देखो" (यूहन्ना 1:46)।

यीशु ही मसीह है

यदि आपसे एक वाक्य में ईसाई धर्म के मूल को संक्षेप में प्रस्तुत करने के लिए कहा जाए, तो आप क्या कहेंगे? यूहन्ना ने आस्था के सार को केवल चार शब्दों में समेटा है: "यीशु ही मसीह है" (20:31)। इसलिए हमारे लिए यह जानना ज़रूरी है कि मसीह नाम का क्या अर्थ है। हम जानते हैं कि हमारे प्रभु को जन्म के समय यीशु का नाम दिया गया था, तो हम उन्हें यीशु मसीह क्यों कहते हैं?

हमारा हिंदी शब्द मसीह ग्रीक शब्द क्रिस्टोस से आया है, जिसका अर्थ है "मसीहा" या "अभिषिक्त व्यक्ति।" मसीह एक उपाधि है जो वादा किए गए व्यक्ति को संदर्भित करती है, जिसे परमेश्वर द्वारा अभिषिक्त किया जाएगा। और पुराने नियम में अभिषिक्त लोगों की तत्काल समीक्षा से हमें इसके महत्व को समझने में मदद मिलेगी।

बाइबिल की पूरी कहानी में, परमेश्वर स्वयं को प्रकट करते हैं ताकि हम उन्हें जान सकें, वे हमें स्वयं से मिलाते हैं ताकि हम उनके पास आ सकें, और वे दुनिया पर शासन करते हैं ताकि उनके उद्देश्य पूरे हो सकें। पुराने नियम में, कुछ लोगों को एक संकेत के रूप में "अभिषिक्त" किया गया था कि परमेश्वर उन्हें इनमें से किसी एक तरीके से उपयोग करेंगे - वे भविष्यवक्ता, पुरोहित और राजा थे।

जैसे-जैसे पुराने नियम की कहानी आगे बढ़ी, यह उम्मीद बढ़ती जा रही थी कि एक दिन परमेश्वर एक सर्वोत्कृष्ट अभिषिक्त व्यक्ति को दुनिया में भेजेंगे। परन्तु चूँकि परमेश्वर का अभिषिक्त व्यक्ति भविष्यवक्ता, पुरोहित या राजा हो सकता है, इसलिए यह समझना आसान है कि मसीहा के संबंध में कितनी विभिन्न अपेक्षाएँ विकसित हुईं। कुछ लोगों ने सोचा कि वह एक भविष्यवक्ता होगा, जो लोगों को धार्मिकता की ओर बुलाएगा। अन्य लोग एक ऐसे पुरोहित की तलाश में थे जो प्रामाणिक आराधना को पुनर्स्थापित करेगा। और अन्य लोग आश्वस्त थे कि मसीहा एक स्वतंत्रता सेनानी होगा जो राजनीतिक विद्रोह का नेतृत्व करेगा और परमेश्वर के लोगों को रोमन साम्राज्य के उत्पीड़न से मुक्ति दिलाएगा।

परन्तु जब यीशु मसीह दुनिया में आए, तो उन्होंने एक नहीं, बल्कि पुराने नियम के सभी कर्तव्यों को पूरा किया। परमपिता परमेश्वर ने अपने पुत्र से कहा, “तुम जाओ और उनके भविष्यवक्ता बनो। तुम जाओ और उनके पुरोहित बनो। तुम जाओ और उनके राजा बनो।” यीशु मसीह परमेश्वर के अभिषिक्त हैं, और यूहन्ना हमें यह दिखाने के लिए सबूत देते हैं कि वे वही हैं जो परमेश्वर की सच्चाई को प्रकट करते हैं, पुरुषों और महिलाओं को परमेश्वर से मिलाते हैं, और परमेश्वर के शत्रुओं पर विजय प्राप्त करते हैं।

सबूत की जांच करें

यूहन्ना इस बात का प्रमाण देते हैं कि यीशु ही मसीह है। वे पुरोहित हैं जो हर मन और जीवन के रहस्यों को जानते हैं। वे एक सामरी स्त्री के बारे में छिपी सच्चाई जानते थे। यीशु से मिलने के बाद, उसने अपने दोस्तों से कहा, “आओ, एक मनुष्य को देखो, जिसने सब कुछ जो मैं ने किया मुझे बता दिया" (यूहन्ना 4:29)। परन्तु यीशु एक भविष्यवक्ता से भी बढ़कर हैं। जब महिला ने कहा, "मैं जानती हूँ कि मसीह जो ख्रिस्त कहलाता है, आनेवाला है" (4:25), यीशु ने उस से कहा, “मैं जो तुझ से बोल रहा हूँ, वही हूँ" (4:26)।

यीशु वह पुरोहित हैं जो हमारे पापों के लिए बलिदान के रूप में अपना जीवन देते हैं। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने यीशु की पहचान "परमेश्वर के मेम्ने के रूप में की, जो जगत का पाप उठा ले जाता है!" (1:29)। परन्तु यीशु एक पुरोहित से भी बढ़कर हैं। जब यूहन्ना के शिष्यों में से एक अन्द्रियास ने यीशु का अनुसरण करना शुरू किया, तो उसने अपने भाई पतरस से कहा, ""हम को ख्रिस्त, अर्थात् मसीह, मिल गया" (1:41)।

यीशु वह राजा है जो हमें हमारे शत्रुओं से बचाता है। एक दिन वह लाजर की कब्र पर आए, जो चार दिन पहले मर गया था। यीशु ने कहा, "पुनरुत्थान और जीवन मैं ही हूं" (11:25), और उन्होंने मृत व्यक्ति की बहन से पूछा कि क्या वह इस पर विश्वास करती है। "“हाँ हे प्रभु, मैं विश्वास करती हूँ कि परमेश्वर का पुत्र मसीह जो जगत में आनेवाला था, वह तू ही है।" (11:27)। यीशु ने "यह कहकर उसने बड़े शब्द से पुकारा, “हे लाज़र, निकल आ!"" (11:43)। और लाजर "जो मर गया था वह कफन से हाथ पाँव बँधे हुए निकल आया" (11:44)। यीशु वह राजा है जो हमें मृत्यु और नरक के अत्याचार से मुक्ति दिला सकता है।

जब हम जान जायेंगे कि यीशु भविष्यवक्ता, पुरोहित और राजा है, तब हम समझेंगे कि उन पर विश्वास करने का क्या अर्थ है। इसलिए यीशु पर विश्वास करने का अर्थ यह है कि हम उस पर विश्वास करते हैं जो वे भविष्यवक्ता के रूप में कहते हैं और हम उनके वचन को सत्य के रूप में लेते हैं। इसका अर्थ है कि हम उन पर पुरोहित के रूप में विश्वास करते हैं कि वे हमें परमेश्वर की उपस्थिति में लाएंगे। इसका अर्थ है कि हम एक राजा के रूप में खुद को उनके अधीन कर देते हैं, उनके अधिकार और शासन के अधीन रहने के लिए।

बहुतायत का जीवन

जब आप विश्वास करते हैं कि यीशु ही मसीह हैं, तो आपका जीवन पूरी तरह से अलग होगा। विश्वास करने से आपको "उसके नाम से जीवन" मिलेगा (20:31)। यीशु ने उस प्रचुर जीवन के बारे में कहा जो केवल वे ही दे सकते हैं: "मैं इसलिये आया कि वे जीवन पाएँ, और बहुतायत से पाएँ" (10:10)। इसका क्या अर्थ है?

बाइबिल कहानी की शुरुआत में, आदम और हव्वा ने भय और निराशा से मुक्त जीवन का आनंद लिया। उन्होंने सुंदर परिवेश में सार्थक कार्य किया।परन्तु सबसे बढ़कर, उन्होंने परमेश्वर की उपस्थिति और साहचर्य का आनंद लिया जो बगीचे में उनके साथ टहलते थे। उनके पास बहुतायत का जीवन था, परन्तु उन्होंने उसे खो दिया। और हम कभी नहीं जान पाए कि उन्होंने क्या आनंद लिया।

यीशु हमें इस पतित संसार की सभी बीमारियों, खतरों, आपदाओं और मृत्यु से मुक्ति दिलाने, और हमें एक बहुतायत के जीवन में लाने के लिए आए जो अभी शुरू हुआ है और अनन्त काल के लिए जारी रहेगा। यीशु पर विश्वास करने से ही हमें यह जीवन उनके नाम पर मिलता है।

कुछ शानदार

पादरी कहते हैं कि कुछ समय पहले, उनकी पत्नी करेन और उन्हें एक अतिथि एकल कलाकार के साथ शिकागो सिम्फनी ऑर्केस्ट्रा सुनने का अवसर मिला था। वे एक बहुत बड़े कलाकार का किरदार निभा रहे थे और यह शानदार था।

एकल कलाकार ने ऐसे बजाया मानो उसका धनुष उसके वायलिन में आग लगा देगा, और अंत में, दर्शकों ने खड़े होकर ज़ोर से तालियाँ बजाईं। यह अप्रतिरोध्य था। तालियाँ लगातार बजती रहीं, और जब यह कम नहीं हुई, तो एकल कलाकार ने अपना वायलिन उठाया और अपना प्रदर्शन दोहराया। जिससे लोग शांत हो गए।

पादरी कहते हैं, जब वे मध्यांतर के लिए बाहर गए तो उनका उत्साह ऊंचा हो गया और दर्शक खुशी से झूम रहे थे। परन्तु मनोरंजन शाला में एक बूढ़ा आदमी इस घटना से परेशान लग रहा था। जैसे ही वे वहाँ से गुजर रहे थे, तो उन्होंने उसे यह कहते हुए सुना, "मैं यहाँ तीस साल से आ रहा हूँ, और मैंने ऐसा पहले कभी नहीं देखा। मुझे यह पसन्द नहीं है," उन्होंने कहा। "मुझे इसके लिए कोई कारण नहीं दिख रहा है।"

पादरी कहते है कि उन्हें खुद को रोकना पड़ा। यहाँ एक व्यक्ति था जो किसी शानदार चीज़ की उपस्थिति में था, जिससे उसके चारों ओर सैकड़ों अन्य लोग झूम उठे थे, और उस बूढ़े व्यक्ति ने इसमें ऐसा कुछ भी नहीं देखा जो असामान्य था। उस व्यक्ति को क्या हो गया था?

जैसे-जैसे हमने चारों सुसमाचार के माध्यम से यात्रा की है, हम वास्तव में कुछ शानदार चीज़ की उपस्थिति में रहे हैं। हमने परमेश्वर की उस अद्भुत योजना को देखा है जिसमें परमेश्वर के पुत्र ने हमारा शरीर धारण किया, हमारे शत्रु का सामना किया, अपना जीवन बलिदान के रूप में दे दिया, मृतकों में से जी उठा और स्वर्ग में चढ़ गया - ताकि उनके नाम में विश्वास के माध्यम से हमें अनन्त जीवन में लाया जा सके ।

इससे अधिक दुखद कुछ नहीं हो सकता कि किसी ने मसीह के दावों और सुसमाचार की पेशकश का सामना किया हो और वह ऐसे चला जाए जैसे कि उसने कुछ भी असाधारण नहीं सुना।

चारों सुसमाचार लिखे गए थे "कि तुम विश्वास करो कि यीशु ही परमेश्वर का पुत्र मसीह है, और विश्वास करके उसके नाम से जीवन पाओ" (20:31)।

क्रीस्त नाम का अर्थ है "मसीहा," या "अभिषिक्त व्यक्ति।" पुराने नियम में, परमेश्वर ने दुनिया में अपने उद्देश्यों को आगे बढ़ाने के लिए भविष्यवक्ताओं, पुरोहितों और राजाओं का अभिषेक किया। उन्होंने उस व्यक्ति की ओर इशारा किया जो उस चीज़ को पूरा करेगा जिसे वे केवल चित्रित कर सकते थे।

चारों सुसमाचार हमें इस बात का प्रमाण देते हैं कि यीशु ही मसीह हैं और हमें दिखाते हैं कि कैसे वे भविष्यवक्ता, पुरोहित और राजा की प्राचीन भूमिकाओं को विशिष्ट रूप से पूरा करते हैं। इतिहास का केंद्रबिंदु यह है कि परमेश्वर ने यीशु के रूप में मानव शरीर धारण किया, और यह उनके माध्यम से ही परमेश्वर के सभी वादे पूरे हुए।

प्रशन

परमेश्वर के वचन के साथ आगे जुड़ने के लिए इन प्रश्नों का उपयोग करें। उन पर किसी अन्य व्यक्ति के साथ चर्चा करें या उन्हें व्यक्तिगत प्रतिबिंब प्रश्नों के रूप में उपयोग करें।

1. यदि आप न्यायिक परिषद में होते, तो यीशु के बारे में कौन सा सबूत आपके लिए सबसे अधिक विश्वसनीय होता?

2. बाइबल का क्या मतलब है जब वह कहती है, "यीशु ही मसीह है"?

3. आपके अपने शब्दों में, यीशु मसीह में विश्वास रखने का क्या अर्थ है?

4. यदि आपके पास केवल यीशु की शिक्षा होती, तो क्या वह आपको स्वर्ग में ले जाने के लिए पर्याप्त होती? क्यों या क्यों नहीं?

5. यीशु जो बहुतायत का जीवन प्रदान करते हैं वह हमारे इस संसार के सामान्य जीवन से किस प्रकार भिन्न है?